अनामिका

सनातन धर्म मे भगवान की पूजा करते समय अनामिका का महत्व क्यो है? इस तथ्य पर ध्यान देगें इस लेख में । इस बारे मे एक बार पडिंत जी से मैने प्रश्न किया तो समुचित उत्तर नही मिला । उनका उत्तर सीधा था कि एसा शास्त्रो मे विधान है पर उस उत्तर से मन को संतुष्टी नही हुई ।

पर एक बार मै एक्यू प्रैशर की किताब के पन्नै पलट रहा था कि उत्तर समझ मे आ गया । उससे पहले एक घटना और याद आती है जो सगाई या कुछ जगह शादी के मौको पर देखने को मिलती है वह है, दूल्हा दूल्हन एक दूसरे को अनामिका मे अंगूठी को पहनाना । कभी आपने सोचा कि एसा क्यो किया जाता हैं । अनामिका का संबन्ध सीधे मनुष्य के दिल से होता है । सबके समाने पति पत्नी एक दूसरे के दिल को तो नही छू सकते है पर अनामिका के सहारे यह काम आसान हो जाता हैं ।

अब यह बात साफ समझ मे आ रही है कि क्यो हम भगवान की पूजा करते समय अनामिका का ईस्तेमाल करते हैं । भगवान की पूजा मन से ही नहीं, दिल से भी करनी चाहिये । इसलिये सनातन धर्म मे अनामिका का बहुत बडा महत्व है । यह हमारे ऋषियो की दूर दृशिता का परिणाम हैं ।

यहाँ पर एक और तथ्य को उजागर कर दे वह है यदि आप अपने दिल को स्वस्थ रखना चाहते है तो अनामिका और छोटी उंगली के दो या तीन सेन्टीमीटर नीचे हथेली के हिस्से को दिन मे दो या तीन बार दबा ले दस या बीस सैकन्ड के लिये । आपका दिल मजबूत रहेगा । क्योकि इस बहाने आप भगवान के पास रहेगे । भगवान भी तो हमारे दिल मे ही रहते है इस बहाने यदि हम उसको याद करते है तो हम अपने दिल को भी ठीक रख सकते हैं।

आप एक और तथ्य की ओर ध्यान दे, अगर आप अपनी अनामिका के अग्र भाग को दूसरे हाथ से दबाये तो आपको दो जगह पर अनुभूति होगी एक तो मष्तिक मे और दूसरी दिल मे, यही अनामिका की खूबी है। यहाँ पर एक और तथ्य क उजागर करना चाहूगा बह है कि सूचाँनायें मष्तिक के आलावा दिल मे भी एकत्र होती है, एकनई खोज के अनुसार ।

रश्मि उमेश रोहतगी नौवी मिचिगन अमरीका अगस्त सात दो हजार सात

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA August 7th 2007

Web page :www.rurohatgi.com email : rurohatgi@yahoo.com